

International Seminar on Henry David Thoreau and Indian Thought organized by Gurukul Mahila Arts & Commerce College, Porbandar on 17th Feb. 2018 as a part of the world-wide bi-centenary celebrations of the advent of the American ascetic - **Henry David Thoreau**. It is equally important to note that the Seminar was organized by an Institution which has been wedded to Gandhian philosophy and *Vedic sankruti* since 1966. Thus, both the locale and the context become very topical to rethink the thoughts of Henry David Thoreau in the birthplace of Mahatma Gandhi. The book among others carries the key-note address by Dr. Rupin Walter Desai and the Valedictory address by Prof. Prem Anand Mishra.

ISBN 978-81-8043-142-5

₹ 600/-

CREATIVE NEW LITERATURE SERIES-182

Published by:

CREATIVE BOOKS

'SHANTI' CB-24, Naraina, New Delhi-110028

Phone: 25775818

e-mail: creativebooks2004@yahoo.com

Copyright © the Editor

Copyright © All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior permission of the Editor.

Edition: 2019

ISBN: 978-81-8043-142-5

Typesetting by:

PRIYANKA GRAPHICS

New Delhi

Printed by:

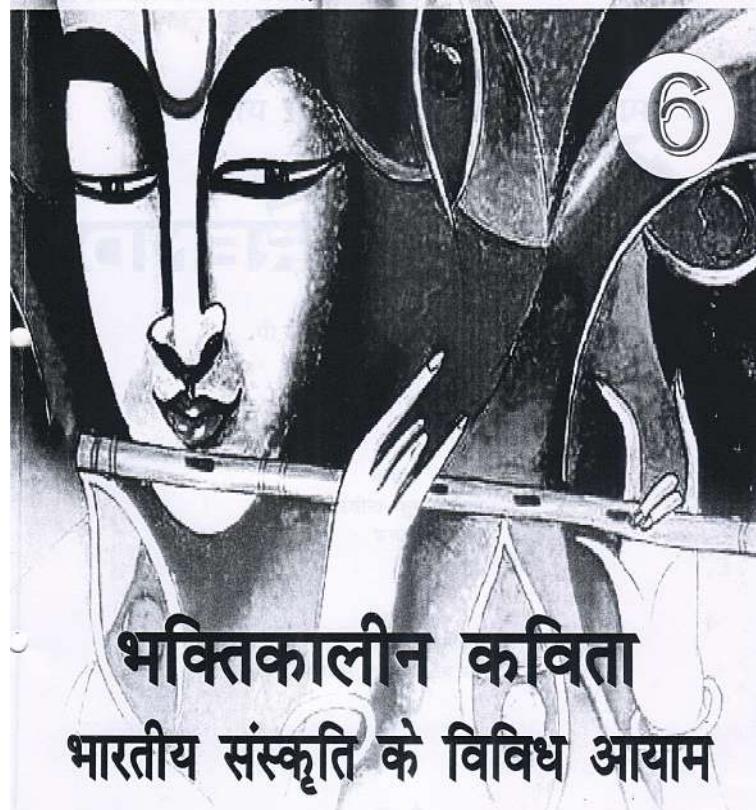
NICE PRINTING PRESS

Delhi

Contents

Preface	vii
Key-Note Address	
Thoreau and Gandhi: Co-Partners from Two Continents	
Rupin Walter Desai	
	11
Henry David Thoreau and Indian Thought	
Anupam R. Nagar	
	23
The Twain do meet: Thoreau's ideological inspiration from the East and the West	
Prashant Sinha	
	54
Henry David Thoreau and his Transcendentalism	
Shruti Kikani	
	62
The Poetic Legacy of Henry David Thoreau	
Sanjay Mukherjee	
	70

द्वे दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी 2-3 नवम्बर, 2017



भक्तिकालीन कविता
भारतीय संस्कृति के विविध आयाम

हरीश अरोड़ा
संयोजक एवं सम्पादक

रवीन्द्र कुमार गुप्ता
प्राचार्य

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सौजन्य : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

भक्तिकालीन कविता भारतीय संस्कृति के विविध आयाम

भाग-6

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी
2-3 नवम्बर, 2017

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

संरक्षक
डॉ. रवीन्द्र कुमार गुप्ता
प्राचार्य

सम्पादक
डॉ. हरीश अरोड़ा
संयोजक, अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी



साहित्य संचय

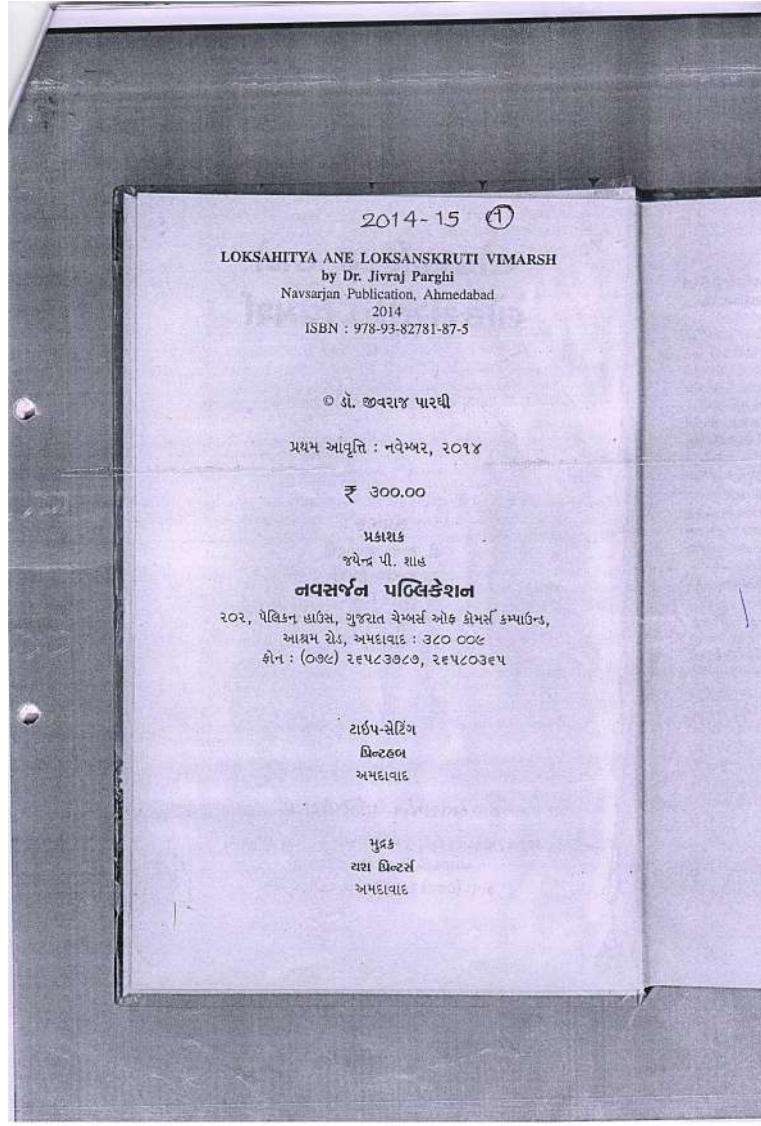
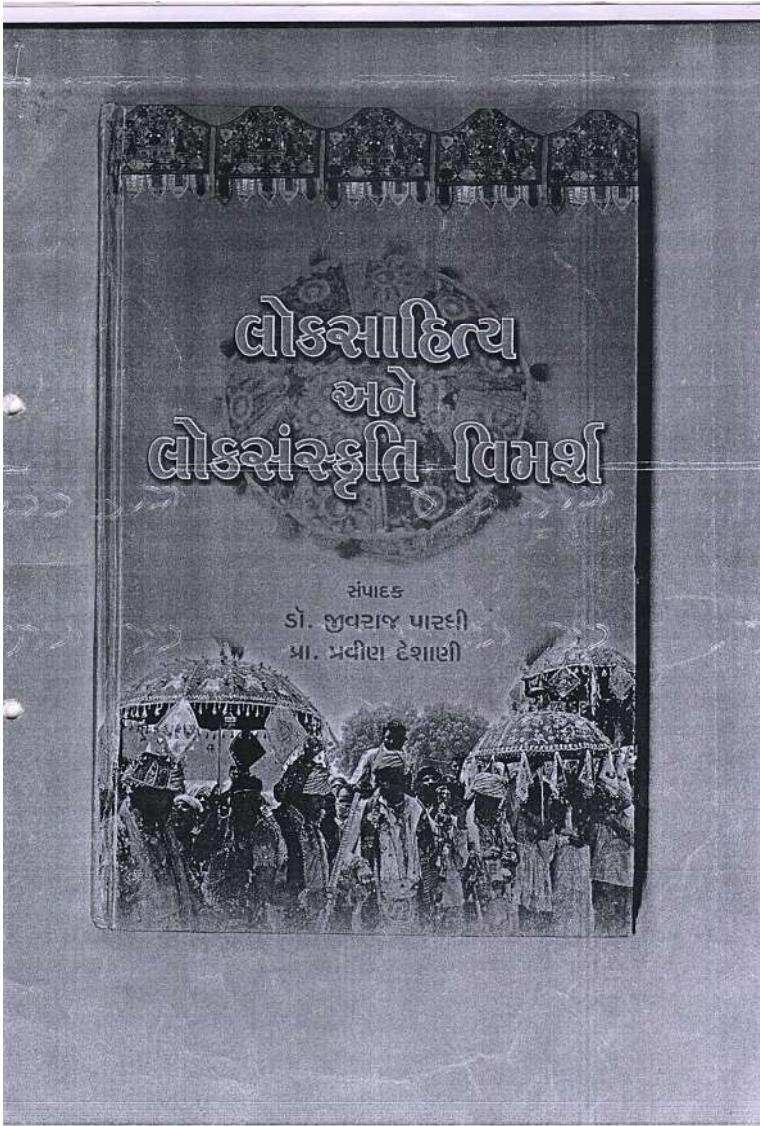
ISO 9001:2015

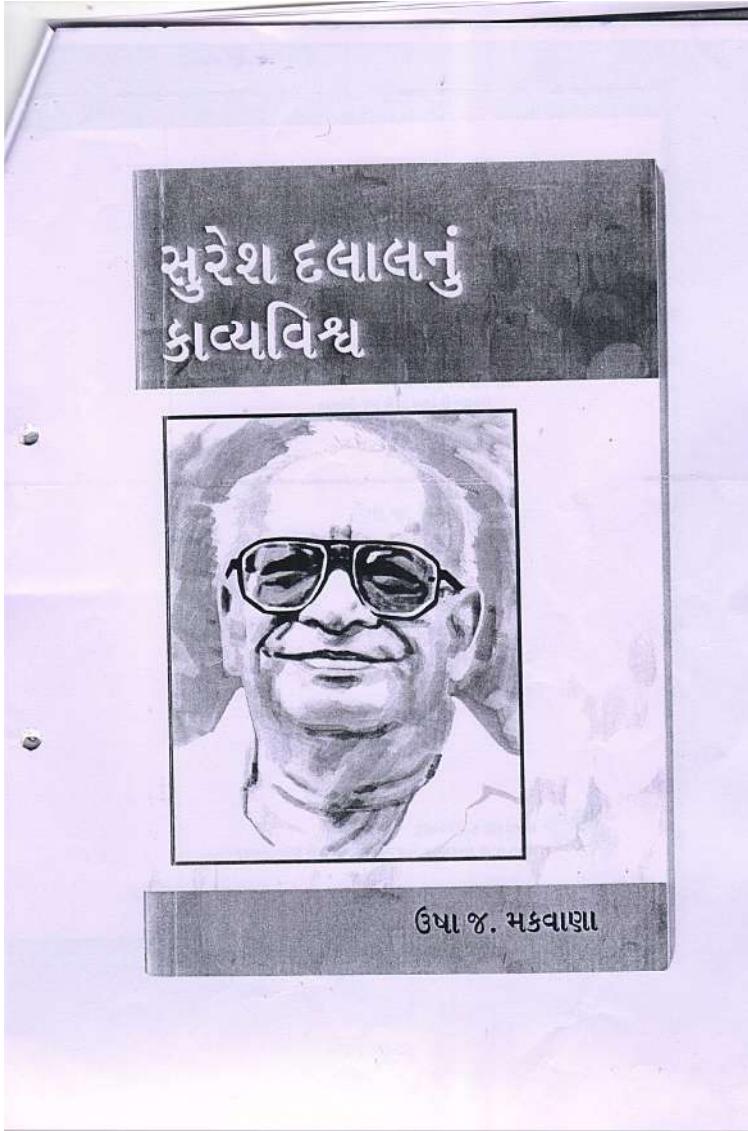
मोबाइल : 9871418244, 9136175560
ISBN No. 978-93-82597-94-0

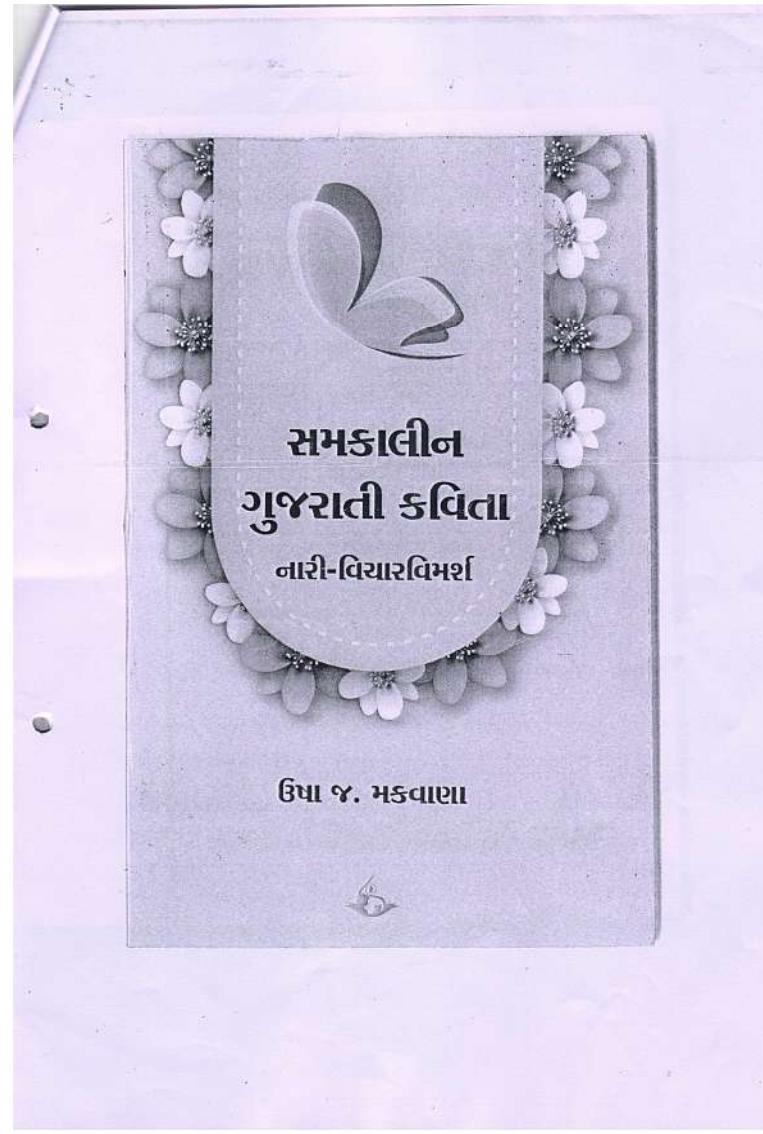
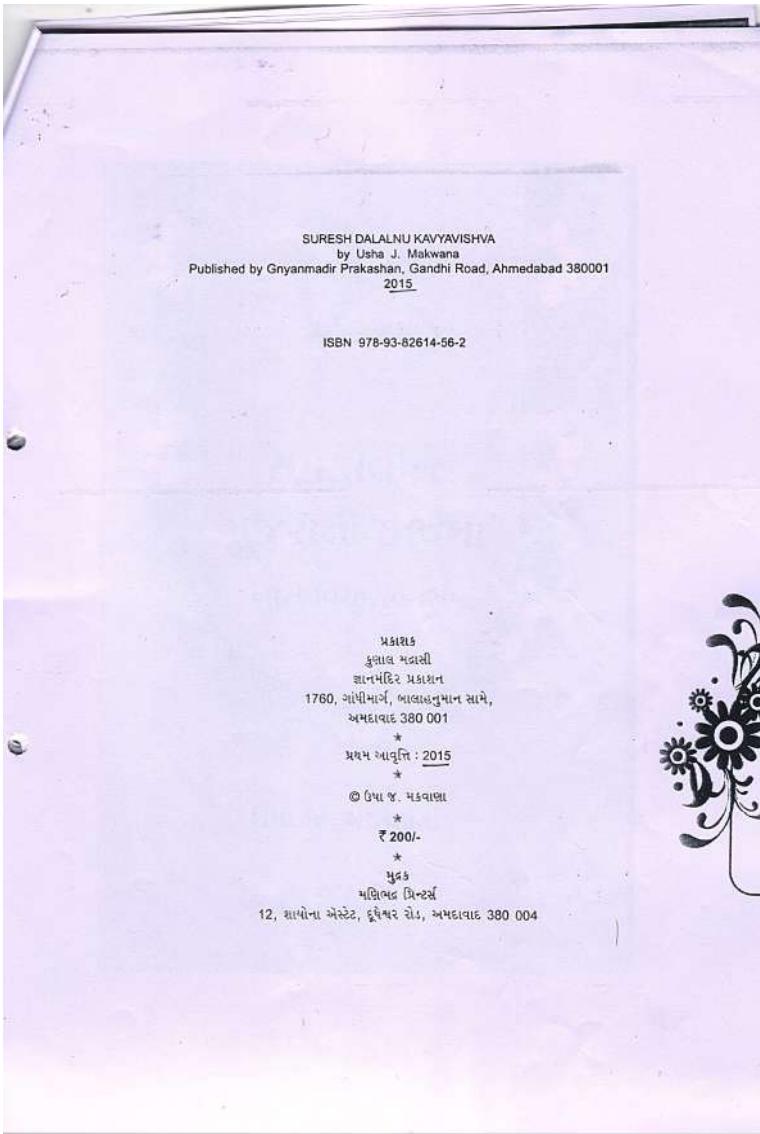
अनुक्रम

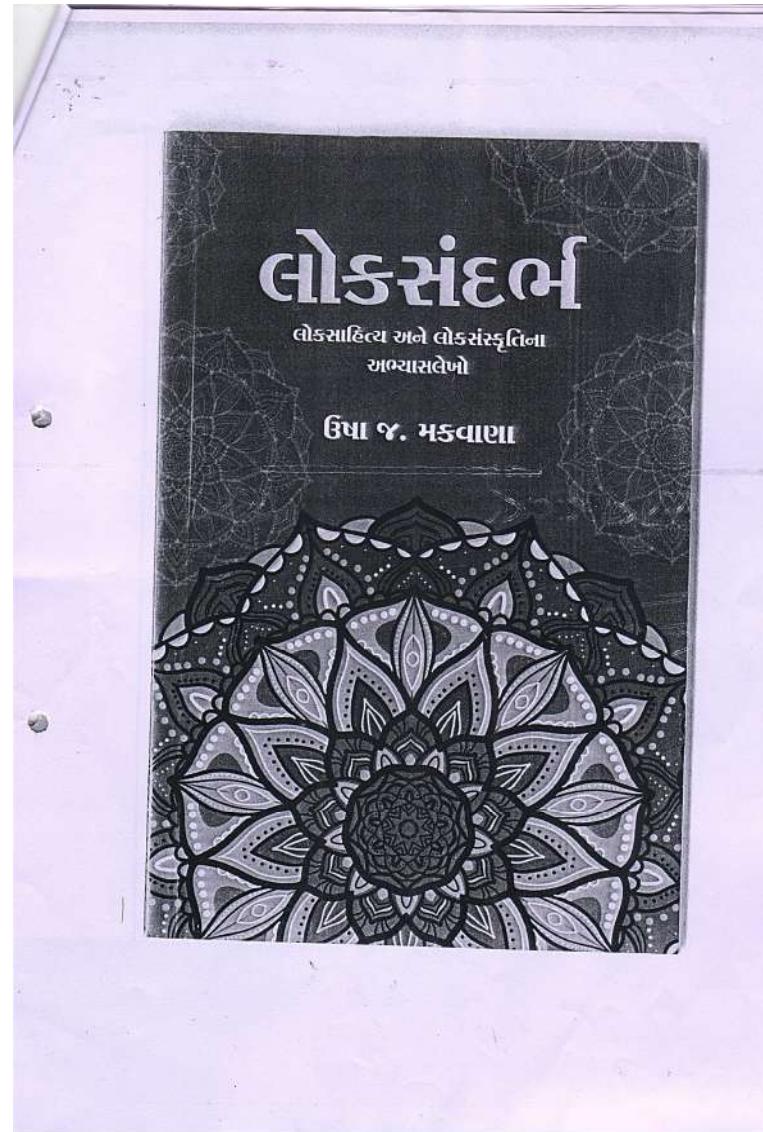
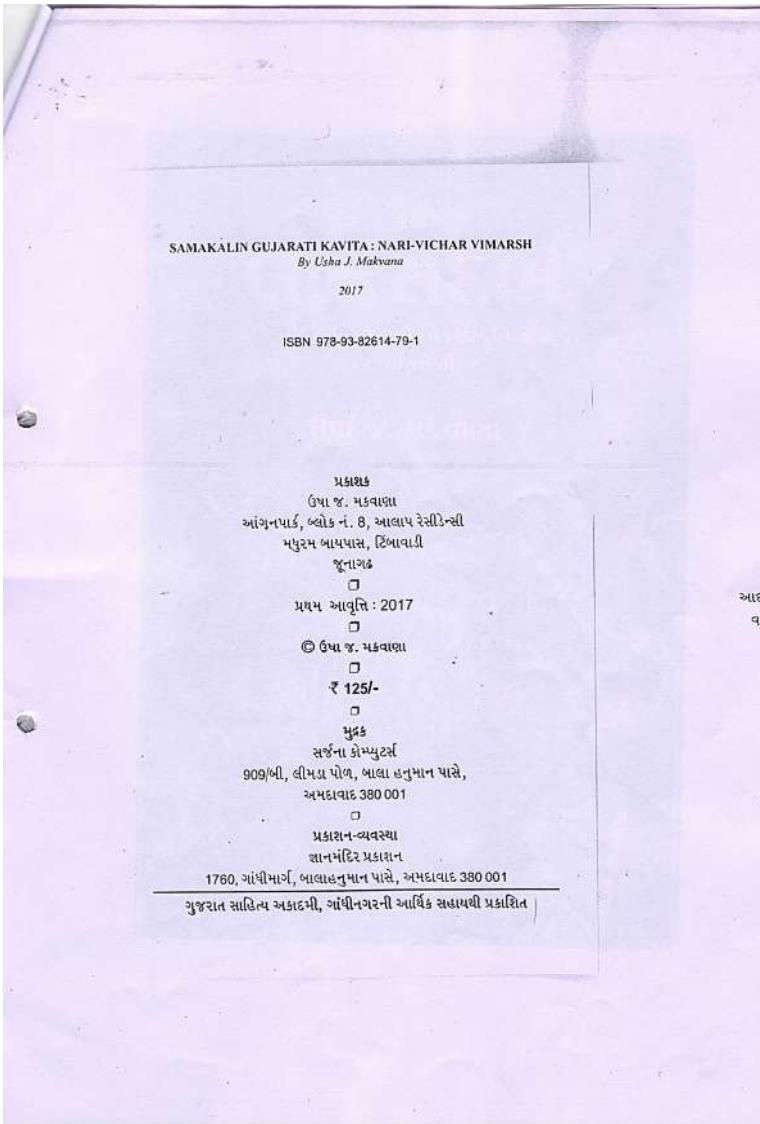
सम्पादकोप (भक्तिकालीन कविता : भारतीय संस्कृति को विघट गाथा).....	3
1. मध्यकालीन प्रेमाख्यानक काव्यों में लोक-जीवन एवं लोकसंस्कृति का उद्घाटन सुरेश चन्द्र	11
2. निर्मुणपाणा के ग्रन्थ संत कवि..... सर्वोप श्रीराम पाईकारव	26
3. कबीर और तुलसीदास के राम सुन्दरप	31
4. समुग्न काव्यपाणा में विश्व साहित्य पटल पर 'रामचरितमानस'..... रामनारायण शर्मा	34
5. भारतीय संस्कृति : दिमाचल प्रदेश में देवतत्र विशेष संदर्भ..... सर्वीन जहाँ	38
6. जायसी की रचनाधर्मिता और भारतीय संस्कृति संजीव मिठौ	41
7. लोकमानस की उज्ज्वलतम महागाथा-सीमान्त : रामचरितमानस सीमा कुमारी	43
8. सामाजिक एकोकरण का भाव और निर्मुण काव्य..... जयती पी.	50
9. रामचरितमानस के लोकतत्वशेफाली वर्मा	52
10. भारतीय संस्कृति के सूत्र और भवित्वकालीन काव्य..... सोनी बाजिराव	55
11. रामचरितमानस में तुलसीदास का संकेत और शैली के, अनीति राणि	59
12. भवित्व आन्दोलन और कबीर..... मनहर के, गोदामपी	61
13. प्रगतिवादी आलोचना और भवित्व काव्य..... आलोक मिठौ	63
14. स्वर्ण दुग्ध : भवित्व कातपिक्की	67
15. कबीर के रामरामसेवक राम भगत	69
16. तुलसी की भवित्व भावना..... गिरा	71
17. लोकमानस की गाथा : रामचरितमानसबन्ना गर्ग	74
18. सत काव्य में जनपदीय आवास व्यवस्था..... अनीता भारद्वाज	76
19. तुलसी काव्य में लोकभगत और समन्वय भावअनीता	78
20. भवित्व आन्दोलन और कबीर..... शेजु पी.के,	80

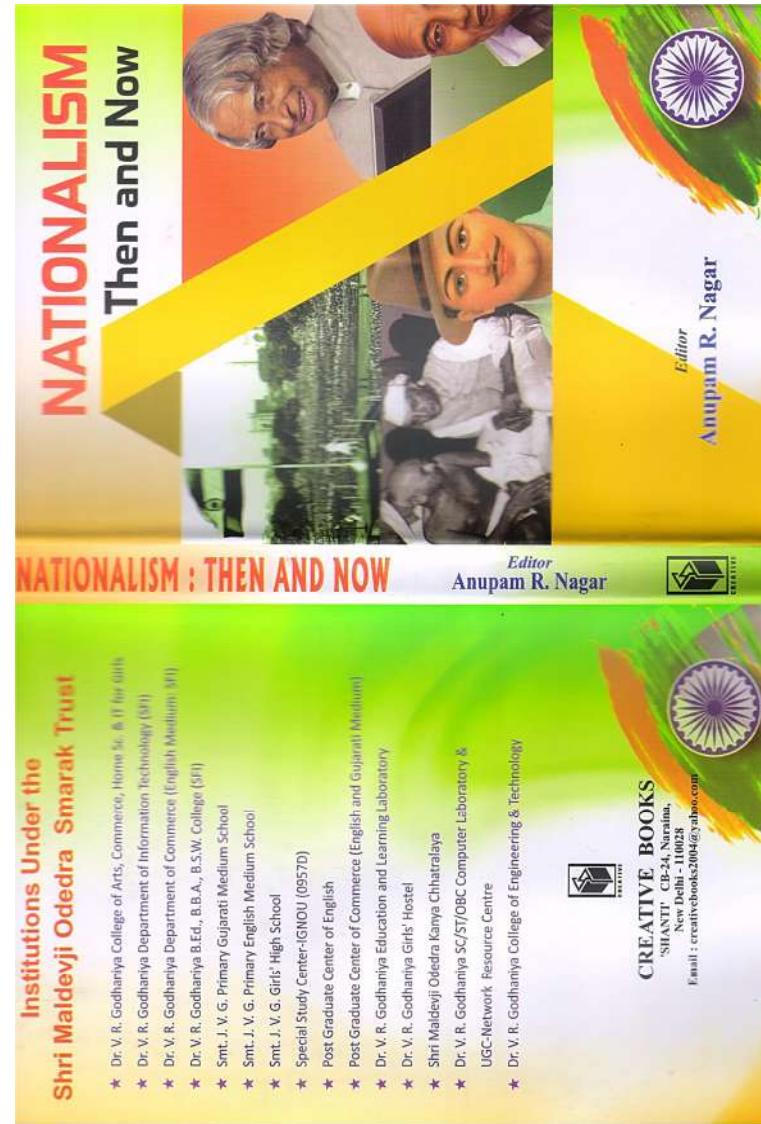
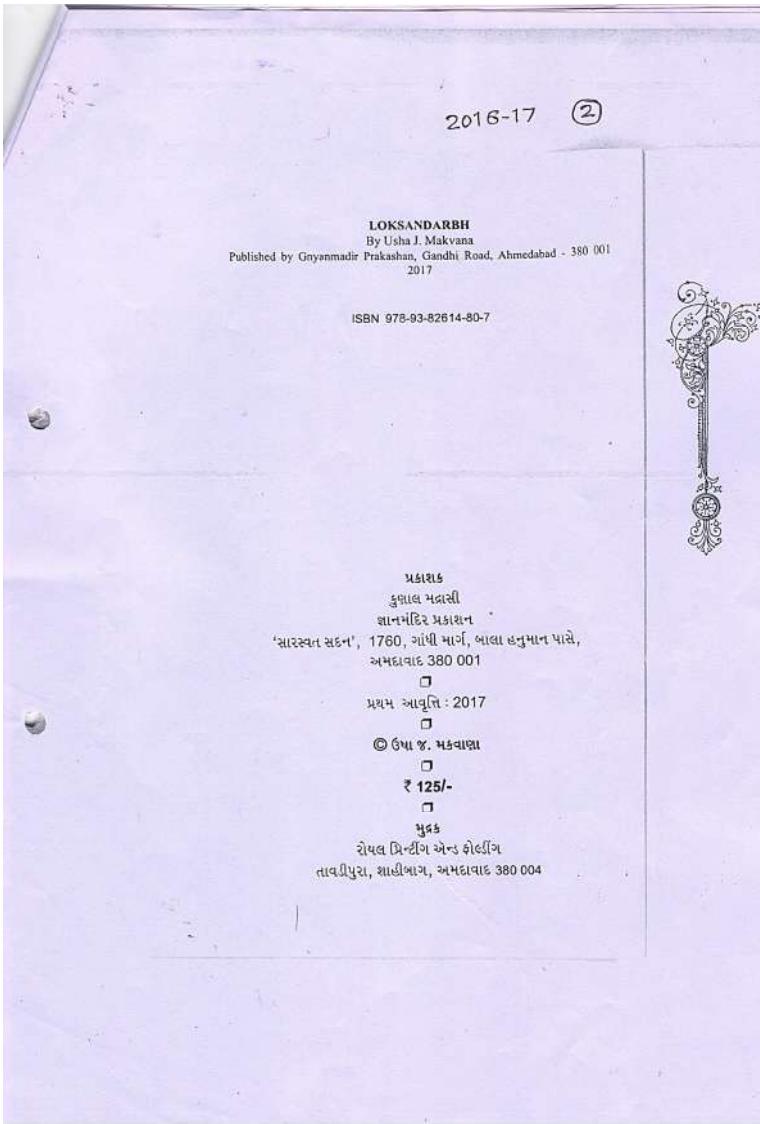
भक्तिकालीन कविता : भारतीय संस्कृति के विविध आयाम : 9

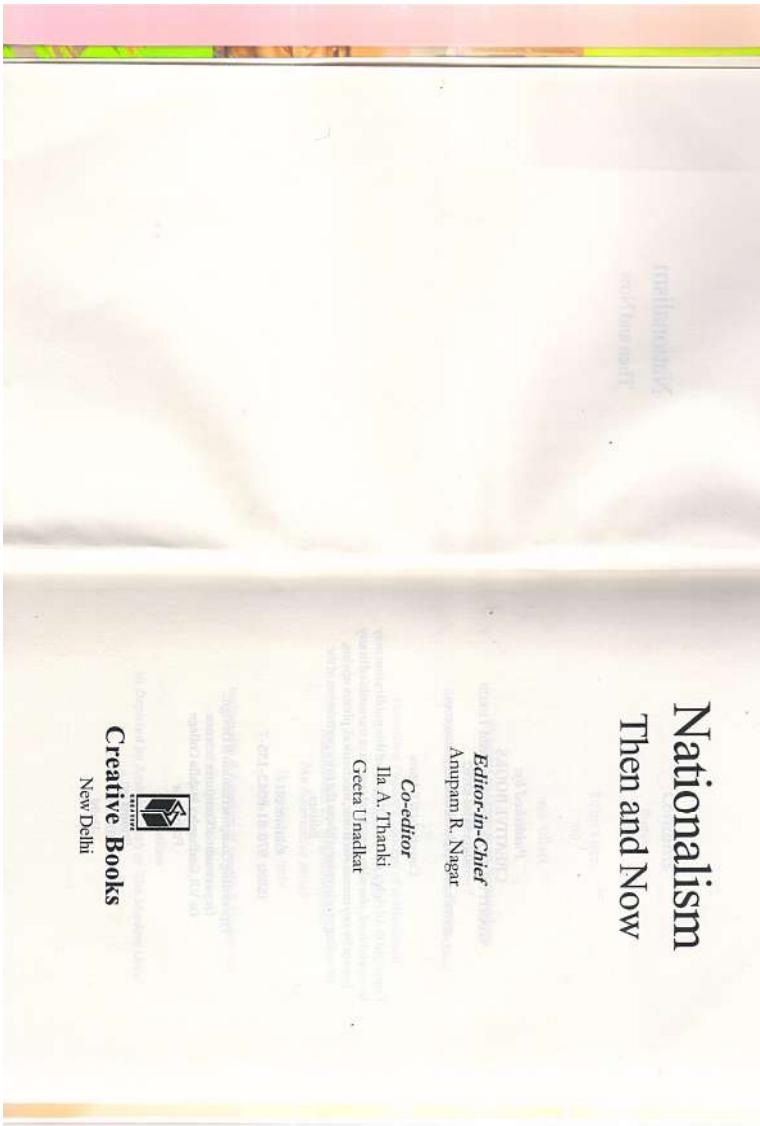












Creative Books
New Delhi

